पाठ - 1 वह चिड़िया जो

शब्दार्थ :-

चुंडी - ज्वार (एक प्रकार का अनाज)	रस उँडेल कर गाना = मीठी स्वर में गाना
रुचि = इच्छा	विजन = आकाश
खातिर = के लिए	सुँह बोली = सुँह से बोलने वाली
गरबीली = गर्व करने वाली।	चढ़ी नदी - पूरी तरह से पानी से भरी हुई नदी।
ढिल टटोलना - अनुमान लगाना	

भावार्थ :-

1. वह चिड़िया जो ------ अन्न से बहुत प्यार है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने एक सुन्दर चिड़िया का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि एक नीले पंखो वाली चिड़िया है, जो अपने नन्हें चोंच से दूध से भरे हुए ज्वार के दानों को बड़े ही स्वाद से खाती है। क्योंकि उसे ज्वार बहुत पसंद है। चिड़िया बड़ी ही संतोष करने वाली है। वह अपना पेट भर कर कुछ दाने दूसरे चिड़ियाओं के लिए छोड़ देती है।

2. वह चिड़िया जो कंठ ------ से बहुत प्यार है।

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने चिड़ियों के स्वतंत्र स्वभाव का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वे आकाश में स्वतंत्र हो कर उड़ना चाहती है और अपने मधुर कंठ से मधुर एवं मीठी आवाज में गाती है। वह नीले पंख वाली छोटी सी चिड़िया बहुत ही प्यारी है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

3. वह चिड़िया जो चोंच मार कर - - - - - नदी से बहुत प्यार है।
इन पंक्तियों के माध्यम से कवि पुनः उस नीले पंख वाली छोटी चिड़िया के अपने आप पर गर्व करने का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि दानों को खाने के बाद वह अपनी प्यास बुझाने के के लिए जल से लबालब भरे नदी के पास जाती है, और वहाँ से वह मोती रूपी जल से अपनी प्यास बुझाती है।

कविता से:-
प्रश्न - उत्तर -

प्रश्न ② - इस कविता का उपयुक्त शीर्षक सोच कर लिखें:-
उत्तर:- इस कविता के उपयुक्त शीर्षक - 'कर्मठ चिड़िया', 'संतोषी-चिड़िया', 'नन्ही चिड़िया' भी हो सकता है।

प्रश्न ③ इस कविता के आधार पर बताएँ कि चिड़िया को किन-किन चीजों से प्यार है?
उत्तर - चूँकि चिड़ियों का स्वभाव होता है स्वतंत्र रहना। अतः सभी चिड़ियाँ चाहती हैं कि हम स्वतंत्र हो कर खुले आसमान में विचरण करें, ज्वार के दूध से भरे दाने का स्वाद लेने, नदी का स्वच्छ जल पीने तथा स्वतंत्र रूप से मधुर गीत गाने से प्यार है।

प्रश्न - 4 - आशय स्पष्ट करें -
(क) रस उड़ेल कर गा लेती है:.
उत्तर - चिड़िया स्वतंत्र रूप से वन में रहती है, वह जहाँ चाहती जाती है, उसके लिए कोई बंधन नहीं है। वह स्वतंत्र हो स्वतंत्र हो कर बहुत ही मीठी स्वर में गा पाती है।

Scanned with CamScanner

(ख) चली नदी का दिल टटोल कर
जल का मोती ले जाती है।

चिड़िया को, जल से लबालब भरी नदी में जा कर अपनी प्यास बुझाने की इच्छा होती है। वह नदी से मोती समान जल की बूँदों से अपनी प्यास बुझाती है।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न- ① कवि ने नीली चिड़िया का नाम नहीं बताया है। आप का क्या अनुमान है, वह कौन सी चिड़िया रही होगी?

उत्तर - कवि ने जिस नीली चिड़िया की चर्चा की है, शायद वह चिड़िया नीलकंठ रही होगी। नीलकंठ का ही अधिकतर शरीर नीला होता है।

②

पक्षी का नाम	चोंच का रंग	शरीर का रंग	आँख	गर्दन
मैना	काली	धब्बेदार	काली	धब्बेदार
कबूतर	काली	भूरा, सफेद, स्लेटी	लाल	चमकीली हरी

इसी प्रकार सभी पक्षी का लिखना है।

भाषा की बात

प्र० ① यहाँ वाला / वाली जोड़ कर बनने वाले कुछ विशेषण दिए गये हैं। इनके पहले एक-एक और विशेषण जोड़ें -

सुन्दर - मोरों वाला बाग
छोटे - पेड़ों वाला घर
पीले - फूलों वाली क्यारी
लंबा - स्कूल वाला रास्ता
बहुत - हँसने वाला बच्चा
लम्बी - मूँछों वाला आदमी

प्रश्न (2) का उत्तर -

क्रिया विशेषण — (क) जल्दी-जल्दी (ख) लुढ़कती हुई (ग) धीरे-धीरे (घ) धप्प से (ङ) फुर्ती से (च) सहमकर (छ) अचानक

Scanned with CamScanner

प्रश्न-उत्तर:.

प्रश्न ① - कविता में कैसी चिड़िया का वर्णन किया गया है?
उत्तर - कवि ने इस कविता में नीले पंखो वाली छोटी, सुन्दर तथा संतोषी चिड़िया का वर्णन किया है। यह भी कहा है कि उसे थोड़े से दानो में संतुष्टी हो जाती है।

प्रश्न -② चिड़िया को किससे प्यार है? और क्यों?
उत्तर - छोटी चिड़िया को ज्वार के दूधिया दाने, आकाश, दिल खोलकर, उमंग में होकर मीठी स्वर में गाना गाने तथा नदी की धारा से कुछ मोती समान जल ग्रहण करने से बड़ा ही प्यार है।

प्रश्न -③ चिड़िया अपना जीवन कैसे जीती है?
उत्तर - चिड़िया स्वतंत्र रहने वाली पक्षी है। इसे कहीं भी आने जाने में कोई पाबंदी नहीं है। ये सब के साथ मिल कर रहना पसंद करती है। इसके मन में कोई लोभ लालच नहीं होता है। ये दूसरों का माल हड़पना नहीं चाहती है। इसे संतोषी कहा गया है।

प्रश्न ④ - चिड़िया के गायन की क्या विशेषता है?
उत्तर - चिड़िया जब अत्यधिक खुश होती है तब वे अपने खुशी मन से कंठ खोल कर मधुर स्वर में उमंग में हो कर गीत गाती है। उनके मधुर गीत से वातावरण में आनन्द फैल जाता है। वह अपने सभी गीत बूढ़े वन बाबा को समर्पित करती है।

प्रश्न -⑤ चिड़िया के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?
उत्तर - कवि चिड़िया के माध्यम से हम मानव को यह बताना चाहते हैं कि - हे! मानव तुम क्यों अपने पैरो में बेड़ियाँ पहने हुए हो? तुम हमारी तरह स्वतंत्र हो जाओ। तुम लोभ-लालच छोड़ कर हमारी तरह संतोष में रहने की आदत डाल लो। सभी से प्रेम करो तथा संकट के समय में कभी भी न घबराने तथा अपने आप पर निर्भर रहने का संदेश देती है।

Scanned with CamScanner

पाठ - 02 - बचपन

शब्दार्थ -

जीजी - बड़ी बहन, दीदी
सयाना - वयस्क, बड़ा, समझदार
बाजू - बाँह
इतराना - इठलाना, ऐंठना
फ्रिल - झालर
स्टॉकिंग - पायताबा
फ़र - लोमवाला चमड़ा, रोंवदार
टेकरी - टिल्ली
सख्त - कठोर
मनाही - अनुमति न मिलना
फ़र्क - अन्तर
ऑलिव ऑयल - जैतून का तेल
कैस्टर ऑयल - अरंडी का तेल
मितली - उल्टी
सेहत - स्वास्थ्य
साइनबोर्ड - अलमारी
मुँह में पानी भर आना - जी ललचना
चैस्टनट - शाहबलूत
कमतर - अधिक छोटा, कम अच्छा
मॉडल - नमूना
आश्वासन - भरोसा
शेर - कविता कुछ पंक्तियाँ
सहल - आसान
सुभीते - सुविधा जनक

प्रश्न - उत्तर -

प्रश्न - ① लेखिका बचपन में इतवार की सुबह क्या-क्या काम करती थी?

उत्तर → लेखिका के घर में नौकर या नौकरानी को मोज़े साफ नहीं करने देते थे। फलतः रविवार के दिन लेखिका को अपने मोज़े तथा जूतों पर पॉलिश करनी पड़ती थी।

प्रश्न - ② - 'तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है।' - इस बात के लिए लेखिका क्या-क्या उदाहरण देती है?

उत्तर - लेखिका अपने समय तथा वर्तमान समय में पाई जाने वाली सामान की तुलना करती हुई कहती हैं कि - पहले के किसी-किसी घरों में ही ग्रामोफोन, रेडियो, टेलीविजन थे, लेकिन आज प्रायः सभी घरों

में उपलब्ध है। पहले कुलफी मिलती थी, अब आई-सक्रीम मिलती है. पहले कचौड़ी-समोसा मिलती थी अब पैटीज मिलने लगे, पहले के शरबत अब केक-पेस्ट्री में बदल गये हैं।

प्रश्न (3) लेखिका को चश्मा क्यों लगाना पड़ा? चश्मा लगाने पर उनके चचेरे भाई उन्हें क्या कहकर चिढ़ाते थे?

उत्तर:- लेखिका की नजर जब कमजोर होने लगी तब लिखने पढ़ने में परेशानी होने लगी। तब उन्होंने डॉ. की सलाह पर चश्मा लगाया। लेखिका को पहली बार चश्मा पहनते देख उनके चचेरे भाई को उनका चेहरा अटपटा लगा, उन्हें उन्हें लंगूर की सूरत कहकर चिढ़ाता।

प्रश्न-(4)-लेखिका अपने बचपन में कौन-कौन सी चीजें मजा ले लेकर खाती थीं? उनमें से प्रमुख फलों के नाम लिखें।

उत्तर- लेखिका बचपन में जिन चीजों को बड़े चाव से खाया करती थीं वे इस प्रकार हैं- कुलफी, समोसा, गरम चना, अनारदाने का चूर्ण, चॉकलेट, पेस्ट्री, फल, फल में 'काफल और 'चेस्टनट' हैं। इसके अलावा शहतूत, फालसे, तथा खसखस का शरबत पीती थी।

भाषा की बात-

क्रिया से भाववाचक संज्ञाएँ बनी हैं-

क्रिया	—	भाववाचक
मारना	–	मार
काटना	-	काट
चलना	–	चाल
चढ़ना	–	चढ़ाई

(2) निम्न के सामने विशेषण के भेद लिखें :-
(क) मुझे दो दर्जन केले चाहिए। — निश्चित संख्या वाचक
(ख) दो किलो अनाज दे दो। - निश्चित परिमाण वाचक
(ग) कुछ बच्चे आ रहे हैं। - अनिश्चित संख्या वाचक
(घ) सभी लोग हँस रहे हैं। - निश्चित संख्यावाचक
(ङ) तुम्हारा नाम बहुत सुन्दर है - निश्चित संख्या वाचक

(3) सार्वनामिक विशेषण -
उत्तर - (i) मैं तुम्हें अपने विद्यालय की ओर लेजाऊँगी।
(ii) हम बच्चे रविवार को सुबह में इसी में लगाते हैं
(iii) हमारा घर स्टेशन से दूर नहीं था।
(iv) अपने-अपने मोजे होते थे।
(v) यह गाना स्कूल के हर बच्चे को आता था।

Scanned with CamScanner

विषय - हिन्दी

पाठ - 03 - नादान दोस्त

शब्दार्थ :-

कार्निस - छज्जा	चाव - रुचि
सुध - याद	उधेड़बुन - समस्या का हल निकालना
पर - पंख	हिकमत - उपाय
फुरसत - आराम	आड़ - परदा
तसल्ली - दिलासा	बहलाना - भुलावा देना
पेचीदा - मुश्किल	हिफाजत - सुरक्षा
जिज्ञासा - जानने की इच्छा	कै - कितने
अधीर - बेचैन	बराबर - समान
मुसीबत - संकट	चिथड़े - रद्दी कपड़े
अंदाजा - अनुमान	थमाना - देना
प्रस्ताव - बातचीत का विषय	चार सर होना - चोट लगाना
दिल में काँपना - डर जाना	भरोसा - विश्वास
एकाएक - अचानक	चेहरे का रंग उड़ना - घबरा जाना
करुणा - दुख से भरा	सोंटी - छोटी छड़ी
छुआ - हाथ लगाया हुआ	तरस आना - दया आना
भीगी बिल्ली बनना - डर के मारे कुछ न बोलना	
जोगा - कोशिश	थामना - पकड़ना

प्रश्न -① अंडों के बारे में केशव और श्यामा के मन में किस तरह के सवाल उठते थे? वे आपस ही में सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली क्यों दिया करते थे?

उत्तर- बच्चों ने जब देखा कि उनके घर की कार्निस पर चिड़िया ने अंडे दिए हैं तो उनके मन में तरह-तरह की जिज्ञासा उत्पन्न होने लगी वे मन ही मन सोचने लगे - कितने अंडे होंगे? कितने बड़े अंडे होंगे? बच्चे कब निकलेंगे। बच्चे किस

Scanned with CamScanner

रंग के होंगे? क्या खाते होंगे? यही सारी बातें बच्चों के मन में उठते थे, और ये उनका उत्तर आपस में ही बातचीत से ढूँढ लेते थे। क्योंकि इनके माता पिता को इनके प्रश्नों के उत्तर देने का समय नहीं मिल पाता था।

प्रश्न - (2) केशव ने श्यामा से चिथड़े, टोकरी और दाना-पानी मँगाकर कार्निस पर क्यों रखे?

उत्तर - केशव और श्यामा को अंडों से काफी लगाव हो चुका था। जब केशव ने देखा की अंडे कुछ खर-पतवार पर रखे हुए हैं तो केशव ने सोचा कि अंडों को सुरक्षित कर दें। इसलिए उसने श्यामा से कुछ चिथड़े लाने के लिए कहा, ताकि अंडों के लिए गद्दी बना सकें। चिड़िया के बच्चों को और किसी प्रकार की कठिनाई न हो इसलिए दाना-पानी तथा धूप से बचने के लिए टोकरी कार्निस पर रखे।

प्रश्न - केशव और श्यामा ने चिड़िया के अंडों की रक्षा की या नादानी?

उत्तर - बच्चे जानकारी के अभाव में चिड़िया के अँडों की रक्षा के लिए ही उनके खाने-पीने तथा धूप से बचाने के लिए उपाय किये थे। उन्हें यह पता न था कि उनके ऐसा करने से अँडे गंदे हो जायेंगे। और चिड़ियाँ उन्हें नष्ट कर देंगी।

Scanned with CamScanner

कहानी से आगे -

प्रश्न (1) केशव और श्यामा ने अंडों के बारे में क्या अनुमान लगाए? यदि उस जगह तुम होते तो क्या अनुमान लगाते और क्या करते?

उत्तर:- केशव और श्यामा अंडों के प्रति बहुत चिंचित थे। उनके मन में बहुत सारे विचार उठ रहे थे, वे अनुमान लगा रहे थे कि - अब अंडों में से बच्चे निकल आए होंगे, अब बेचारी अकेली चिड़िया उन बच्चों के लिए दाना कहाँ से लायेगी, बेचारे बच्चे भूखे ही मर जाएँगे।

यदि केशव और श्यामा की जगह मैं होता तो पहले मैं यह देखता कि अंडों से बच्चे निकले हैं कि नहीं? अगर बच्चे नहीं निकले होते मैं उन अंडों को नहीं छूता। यदि बच्चे निकल गये होते तो मैं उनके दाना-पानी का उपाय करता।

प्रश्न (2) माँ के सोते ही केशव और श्यामा दोपहर में बाहर क्यों निकल आए? माँ के पूछने पर भी दोनों में से किसी ने किवाड़ खोल कर दोपहर में बाहर निकलने का कारण क्यों नहीं बताया?

उत्तर → गर्मी के दोपहर में माँ जब भी सोती तो दोनों बच्चों को भी सुलाती थी। लेकिन बच्चों को अंडों की चिंता थी, इसलिए उन्हें नींद नहीं आ रही थी। और माँ के जागते घर में वे अंडों के पास नहीं जा सकते थे। जब माँ को नींद आ गई तब बच्चों को दोपहर में घर से बाहर निकल कर चिड़िया के अंडे के पास पहुँचने का अवसर मिल गया।

माँ ने जब दोपहर में बाहर जाने का कारण पूछा तो बच्चे मार खाने के डर से कोई कारण नहीं बताया।

Scanned with CamScanner

प्रश्न - ③ - प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'नादान दोस्त' रखा तुम इसे क्या शीर्षक देना चाहोगे ?

उत्तर - इसका दूसरा शीर्षक निम्नलिखित भी हो सकता है :-
(1) बच्चों की नादानी (2) अंडों की सुरक्षा (3) रक्षा में हत्या

भाषा की बात :-

उत्तर - (1) अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम — उन्होंने, उनकी, उसने
उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम - मैं, मुझे
मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम - आप

उत्तर (2) गुणवाचक विशेषण —
शान्त - सोहन शान्त लड़का है।
लालची - गीता लालची लड़की है।
बूढ़ा - बूढ़ा लाचार व्यक्ति है।
पतली - सीता पतली होती जा रही है।

उत्तर (3) झुँझलाकर, बनाकर, थककर, टिकाकर, गिड़गिड़ाकर ये सभी रीतिवाचक क्रिया विशेषण का काम कर रहे हैं।

झुँझलाकर — मेरी बात सुनकर वह झुँझलाकर चला गया।
बनाकर — गीता खाना बनाकर चली गई।
थककर - भारत में करोना की खबर से सभी थक गए।
टिकाकर - अपने लक्ष्य पर ध्यान टिकाकर रखना चाहिए।
गिड़गिड़ाकर - चोर सर की ओर से सभी के सामने गिड़गिड़ा रहा था।

Scanned with CamScanner

कक्षा - 06
हिन्दी

पाठ - 04 - चाँद से थोड़ी-सी गप्पें

शब्दार्थ -

तिरछे - टेढ़ा	चिट्टा - सफेद	मरज - बीमारी
जरा - थोड़ा	सिम्त - दिशाएँ	निरा - पूरा
कुल - सारा, सब	गोकि - यद्यपि, हालाँकि	घटना - कम होना
		दम - साँस

भावार्थ :-

गोल हैं खूब मगर - - - - - - - हुए चारों सिम्त।
एक बच्ची जिसकी उम्र दस-ग्यारह वर्ष हो गई है। चाँद को देख कर उसके मन में विचार उठ रहे हैं। वे अपनी भोली भाली आवाज में चाँद से कहती है - आप तो एकदम गोल हैं लेकिन आप कुछ तिरछे दिखाई पड़ते हैं। आप ने तो सारे आसमान को अपना वस्त्र बनाकर पहन लिया है. आसमान में चमकते तारे ऐसे लगते हैं मानों कपड़ों में सितारे जड़े हुए हैं। इन कपड़ों से आप ने अपना सारा शरीर ढ़क लिया है सिर्फ आपका सुन्दर गोल मुँह दिखाई दे रहा है

खूब हैं गोकि - - - - - - - बिलकुल गोल।
इन पंक्तियों के माध्यम से लड़की चाँद से कहती है कि आप कुछ तिरछे दिखाई देते हैं। आप ने हमको एकदम बेवकूफ ही समझ लिया है। मैं आप की बीमारी के बारे में जानती हूँ। कभी आप दुबले पतले दिखाई देते हैं तो कभी-कभी पूरी तरह गोल दिखाई देते हैं। न जाने आप को यह कैसी बीमारी है जो कभी ठीक होने का नाम ही नहीं लेती है।

Scanned with CamScanner

कविता से :-

1. उत्तर - "आप पहने हुए हैं कुल आकाश" कहकर लड़की चाँद की पोशाक चारों दिशाओं में फैली हुई है यह बताना चाहती है कि पूरे आकाश में सिर्फ आप का सुंदर चेहरा दिखाई देता है। आप का यह चेहरा आकाश जैसे उस वस्त्र से छिपा है जिसमें तारे रूपी सितारे जड़े हैं।

2. पूर्णिमा - इस दिन चाँद अपने पूरे रूप अर्थात गोल दिखाई देता है।
अष्टमी से पूर्णिमा के बीच → चाँद का आकार प्रतिदिन बढ़ता है और अंत में एकदम गोल हो जाता है उस दिन पूर्णिमा होती है।
प्रथमा से अष्टमी के बीच - कृष्ण पक्ष में गोल चाँद का आकार धीरे-धीरे घटने लगता है, वह आधा हो जाता है।
शुक्ल पक्ष में चाँद बिलकुल पतला-सा होता है एवं धीरे-धीरे बढ़ता जाता है।

भाषा की बात -

1. गुलाब - ई (प्रत्यय) - गुलाबी (विशेषण) गुलाबी नगर
मखमल - ई " - मखमली " मखमली चादर
कीमत - ई " - कीमती " कीमती गाड़ी
ठंड - ई " - ठंडी " ठंडी हवा
जंगल - ई " - जंगली " जंगली पशु
कश्मीर - ई " - कश्मीरी " कश्मीरी चादर

2. मिलते जुलते अर्थ वाले शब्द -
उड़ता-फिरता, हलका-फुलका, रहना-सहना, बची-खुची

Scanned with CamScanner

(3)- अंबर -(क) वस्त्र — (वाक्य बनाये)
(ख) - आकाश - (वाक्य बनाये)

हार -(क) - पराजय
(ख) - गले का हार

उत्तर - (क) जवाब
(ख) दिशा

अन्य परीक्षोपयोगी प्रश्न उत्तर —

1. चाँद से गप्पें कौन लड़ा रहा है?
उ० - एक लड़की जिसकी उम्र दस-ग्यारह साल है।

2 - लड़की चाँद से क्या बातें करती है?
उ० - लड़की चाँद के आकार-प्रकार और उसकी पोशाक के बारे में बातें कर रही है।

3 - वह चाँद के घटने-बढ़ने का क्या कारण बताती है।
उ० - लड़की का विचार है कि चाँद को कोई बिमारी है जिसके कारण वह घटता बढ़ता है।

4 - चाँद की पोशाक के बारे में कविता में क्या कहा गया है?
उ० - चाँद ने पूरे आसमान को अपनी पोशाक बना लिया है उस पोशाक में तारे जड़े हुए हैं। इसी पोशाक में चाँद इस प्रकार लिपटा है जिसमें उसके गोल सुन्दर चेहरा दिखाई देता है।

5. शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष क्या है?
उत्तर - शुक्ल पक्ष — जब चंद्रमा प्रतिदिन शाम के समय निकलता है तो पतला होता है, प्रतिदिन इसका आकार बढ़कर बड़ा होता जाता है। इस पंद्रह दिन की अवधि को शुक्ल पक्ष कहते हैं।

कृष्ण पक्ष — जब चन्द्रमा शाम को न निकलकर देर रात निकलता है, और यह प्रतिदिन घटता जाता और अंत में यह एक रात पूरी तरह दिखाई नहीं देता है, आमावस्या कहलाती है। इस पंद्रह दिन की अवधि को कृष्ण पक्ष कहते है।

हिन्दी

पाठ - 5 - अक्षरों का महत्व

शब्दार्थ :-

तादाद → संख्या

मूल → जड़

अनादिकाल → जो पहले से चला आ रहा है।

जमाने → समय

औजार → अस्त्र-शस्त्र

इस्तेमाल - प्रयोग

प्रागैतिहासिक → इतिहास में वर्णित काल के पहले

चहुँओर → चारों ओर

द्योतक → सूचक

सिलसिला → क्रम

कौम → जाति

पीढ़ी → किसी कुल, जाति या व्यक्ति की वंश की कोई कड़ी।

प्रश्न - उत्तर - निबंध से →

प्रश्न - (1) पाठ में ऐसा क्यों कहा गया है कि अक्षरों के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई?

उत्तर - अक्षरों की खोज के बाद लिखने की प्रक्रिया शुरू हुई पूर्वजों ने अपने अनुभव एवं ज्ञान, आने वाली पीढ़ी को अक्षरों के माध्यम से लिखित रूप में मिलने लगी ऐसा होने से हमारा विकास होने लगा, मनुष्य के कदम सभ्यता की ओर बढ़ने लगे। और एक नए की शुरुआत हुई।

प्रश्न (2) - अक्षरों की खोज का सिलसिला कब और कैसे शुरू हुआ? पाठ पढ़कर उत्तर दें।

उत्तर → प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले अपने मन की भावों को व्यक्त करने के लिए चित्र-संकेतों का सहारा लिया। जैसे - एक वृत्त के चारों ओर रेखाएँ खींच कर सूर्य का चित्र बनाकर गर्मी एवं धूप को दर्शाया गया। भाव को व्यक्त करने का यह प्रयास आगे चलकर अक्षरों की खोज में बदल गया

प्रश्न - (3) अक्षरों के ज्ञान से पहले मनुष्य अपनी बात को दूर-दराज के इलाकों तक पहुँचाने के लिए किन-किन साधनों

P.T.O.

Scanned with CamScanner

का सहारा लेता था?

उत्तर → मनुष्य ने अक्षरों की खोज करने से पहले अपने संदेशों को दूर-दराज के इलाकों तक पहुँचाने के लिए बहुत सारे तरीके अपनाए गए थे। इसमें मुख्य चित्र के माध्यम से पशु-पक्षियों के चित्र बना कर अपने भावों-विचारों को प्रकट किया जाता था। इसके बाद सांकेतिक भाषा के माध्यम से अपने शारीरिक एवं अन्य सहायक सामग्रियों से अपने भाव-विचार प्रकट करता था।

निबंध से आगे-

प्रश्न ① अक्षरों के महत्व की तरह ध्वनि के महत्व के बारे में क्या जानते हैं?

उत्तर- अपने भावों को व्यक्त करने के दो तरीके हैं- अक्षरों के द्वारा लिख कर और ध्वनियों द्वारा बोल कर। ~~भाषा~~ अक्षर और ध्वनि भाषा के दोनों रूपों लिखित और मौखिक आधार हैं। अक्षरों के बिना हम लिख नहीं सकते और ध्वनि के बिना बोल नहीं सकते। अपनी भाषा की सार्थक ध्वनियों के उच्चारण द्वारा ही हम अपना भाव व्यक्त करते हैं। इसलिए अक्षर के समान ध्वनि भी महत्वपूर्ण है।

प्रश्न ② - मौखिक भाषा का जीवन में क्या महत्व होता है?

उत्तर - मौखिक भाषा ही एक ऐसा माध्यम है। हम अपने प्रतिदिन के व्यवहार पर देखें तो पाएँगे कि असंख्य बार मौखिक भाषा के प्रयोग से हम अपनी मन की बात दूसरों तक पहुँचाते हैं। इसके प्रयोग के बिना हम गूँगे बहरे के समान हैं। मौखिक भाषा की विशेषता इसलिए भी है कि

हर बात को लिख कर नहीं बताई जा सकती। इसके अलावा लिखित भाषा को सीखने में समय लगता है। लेकिन मौखिक भाषा का प्रयोग बच्चे तब से करते है जब से वह बोलना शुरु करता है।

3- क्या होता अगर — (क) हमारे पास अक्षर न होते

(ख) भाषा न होती

उत्तर-(क)- यदि अक्षर न होते तो आज हम इतने सभ्य एवं विकसित न होते। हमें इतिहास के बारे में कुछ पता न चलता और न ही हमारे पूर्वजों ने पहले के समय में कैसे रहते थे? उनकी दिनचर्या, उनका जीवन किस तरह का होता था? ये सारी बाते अगर लिखित न होती तो आज हम उनके बारे में नहीं जान पाते। और मानव जाति आज जहाँ है वहाँ नहीं होती। अतः अक्षर का का ज्ञान होना जरुरी है।

(ख)- यदि भाषा न होती, तो मन के भाव को हम व्यक्त नहीं कर पाते।

भाषा की बात-

1. उत्तर→

	उपसर्ग	मूलशब्द
असफल	अ +	सफल
अनुचित	अन् +	उचित
अपरिचित	अ +	परिचित
अदृश्य	अन् +	दृश्य
अनावश्यक	अन् +	आवश्यक
अनिच्छा	अन् +	इच्छा

2- खाली स्थान

उत्तर-

कटोरी	सकड़
मीटर	ट्रक
प्याला	किलो
लीटर	चम्मच

हिन्दी

पाठ-06 - पार नजर के

शब्दार्थ:-

मनाही → अनुमति न होना	खैरियत - कुशलता
सिक्योरिटी → सुरक्षा	माहौल - वातावरण
चेहरा → कुछ	लाजिमी - जरूरी
चुनिंदा → चुने हुए	खास - विशेष
हथिया लेना - प्राप्त करना	स्पेस सूट - अंतरिक्ष में जाने के लिए पहने जाने वाले कपड़े
हीया - हीयक	मुमकिन - संभव
खाँचा - टोकरा,	प्रशिक्षण - किसी काम करने का ज्ञान
फिसल जाना - हाथ से निकलना	ऊष्णता - गर्मी
संदेहास्पद - संदेह की दशा में	नाकाम - नाकाम
हरकत - क्रिया	सतर्कता - सावधानी
सुचारु - अच्छी तरह से	जाहिर - प्रकट
मंशा - इच्छा	संदेह - शक
पारी - शिफ्ट	

कहानी से:-

प्रश्न-① छोटू का परिवार कहाँ रहता था?

उत्तर- छोटू का परिवार मंगल पर जमीन के नीचे कॉलोनी में रहता था।

प्रश्न-② छोटू को सुरंग में जाने की इजाजत क्यों नहीं थी? पाठ के आधार पर लिखें।

उत्तर- सुरंग में कई तरह के यंत्र लगे हुए थे। उन यंत्रों के पास वही व्यक्ति जा सकते थे जो उन यंत्रों को चलाते एवं देखभाल करते। यही कारण है कि छोटू को सुरंग में जाने की अनुमति नहीं थी।

प्रश्न ③ कंट्रोल रूम में जा कर छोटू ने क्या देखा और वहाँ उसने क्या हरकत की?

उत्तर -(3) कंट्रोल रूप में छोटू उस दिन अपने पापा के साथ गया वहाँ उसने अंतरिक्ष क्रमांक एक देखा। छोटू पूरे ध्यान से कॉन्सोल पैनल पर देख रहा था। उसने देखा कि पैनल पर एक यान है जिसमें से एक यांत्रिक हाथ बाहर निकल रहे हैं. उस हाथ की लम्बाई हर पल बढ़ती ही जा रही है। छोटू के मन में कॉन्सोल पैनल का एक लाल बटन दबाने की इच्छा बार-बार हो रही थी। अंत में उसने उस लाल बटन को दबा ही दिया। परिणाम यह हुआ की बटन दबाते ही खतरे की घंटी बज उठी और अंतरिक्ष यान की गति रुक गई। इस हरकत के लिए उसे थप्पड़ भी खानी पड़ी।

प्रश्न -(4) इस कहानी के अनुसार मंगलग्रह पर भी आम जन-जीवन था वह सब कैसे नष्ट हो गया?

उत्तर - हाँ! यह सच है कि मंगलग्रह पर भी लोग आम जन-जीवन बिताया करते थे। लेकिन समय के अनुसार धीरे-धीरे वातावरण में परिवर्तन होने लगा। इस परिवर्तन में सबसे बड़ा परिवर्तन सूरज में हुआ, सूरज की गर्मी तथा रोशनी से सब जीवों को पोषण मिलता था। लेकिन उसमें परिवर्तन आने से प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया, और वहाँ रहने वाले पशु-पक्षी, पेड़-पौधे प्रभावित होने लगे और एक-एक कर नष्ट होने लगे।

प्रश्न (5) कहानी में अंतरिक्ष यान को किसने भेजा और क्यों?

Scanned with CamScanner

उत्तर (5) → अंतरिक्ष यान को पृथ्वी की एक अंतरिक्ष वैज्ञानिक संस्था नासा ने भेजा था। इस यान का नाम वाइकिंग था। पृथ्वी के वैज्ञानिक मंगल ग्रह की मिट्टी का अध्ययन कर यह पता लगाना चाहते थे कि वहाँ (मंगल ग्रह पर) भी जीव सृष्टि का अस्तित्व है या नहीं? इस लिए उस यान को मंगल ग्रह पर मिट्टी लाने हेतु भेजा गया था।

प्रश्न (6) नंबर एक, नंबर दो और नंबर तीन अजनबी से निबटने के लिए कौन से तरीके सुझाते हैं? और क्यों?

उत्तर - तीनों ने अजनबी यान से निबटने के लिए अपना-अपना विचार दिये -

नंबर एक का कहना था कि: इस अजनबी यान में केवल यंत्र हैं, हम इसको स्पेस में खत्म करने की क्षमता रखते हैं। लेकिन इसके नष्ट होने पर हम इससे कोई जानकारी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। दूसरी बात यह भी है कि हम इस यान को जमीन उतारने के लिए भी हमारे पास कोई यंत्र नहीं है। यदि यह अपने से ही जमीन पर उतर जाए तो हम इसे बेकार कर सकते हैं।

नंबर दो एक वैज्ञानिक थे उन्होंने बताया कि - यंत्रों को बेकार कर देने में भी खतरा है। क्योंकि इसके बेकार होते ही दूसरे ग्रह के लोगों को हमारे बारे में पता चल जाएगा। इसलिए मेरे विचार से हमें इस यान का अवलोकन करते रहना चाहिए।

Scanned with CamScanner

नंबर तीन ने अपना विचार देते हुए कहा— जहाँ तक हो सके हमें अपने अस्तित्व को छिपाए ही रखना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि जिन लोगों ने अंतरिक्ष भेजे हैं, वे कल, इससे भी बड़े अंतरिक्ष यान भेजें। हमें यहाँ का प्रबंध कुछ इस तरह रखना चाहिए जिससे इन यंत्रों को यह गलतफहमी हो जाए कि इस जमीन पर कोई भी चीज इतनी महत्वपूर्ण नहीं है कि वे लाभ उठा सकें। अध्यक्ष महोदय से मैं यह निवेदन करता हूँ कि इस तरह का प्रबंध हमारे यहाँ किया जाए।

भाषा की बात—

संधि विच्छेद—

1. शिष्टाचार – शिष्ट + आचार
श्रद्धांजलि – श्रद्धा + अंजलि
दिनांक – दिन + अंक
उत्तरांचल – उत्तर + अंचल
सूर्यास्त – सूर्य + अस्त
अल्पाहार – अल्प + आहार

2. (क) शिक्षक के आते ही, शोर बंद हुआ।
जैसे ही शिक्षक आए, शोर बंद हो गया।
(ख) चोर के जाते ही, पुलिस आई।
जैसे ही चोर गया, पुलिस आ गई।

(ग) घर पहुँचते ही, बिजली चली गई।
जैसे ही घर पहुँचा, बिजली चली गई।

हिन्दी पाठ - 06 - पार नजर के

(3) उत्तर -

नजर पड़ना - मेले में सीता पर मेरी नजर पड़ी
नजर रखना - शिक्षक ने रमेश को छात्रों पर नजर रखने को कहा।
नजर आना - अपनी गलती मुझे नजर आने लगा।
नजरें नीची होना - गलती पकड़े जाने पर सोहन की नजरें नीची हो गई।

कुछ करने को! —

आकर्षक - विशेषण - वाक्य बच्चे खुद बनायें।
आकर्षण - संज्ञा

प्रभाव - संज्ञा
प्रभावशाली - विशेषण

प्रेरणा - संज्ञा
प्रेरक - विशेषण

प्रतिभाशाली - विशेषण
प्रतिभा - संज्ञा

Scanned with CamScanner

कक्षा VI (छ:)
व्याकरण

अप्रैल

वर्ण

वर्ण - वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिनके खंड या टुकड़े नहीं किये जा सकते हैं।
जैसे :- अ, आ, इ, ई, क, ख, च, छ आदि।

वर्ण के दो भेद होते हैं :-
(क) स्वर वर्ण (ख) व्यंजन वर्ण

(क) स्वर वर्ण :→ जिन वर्णों के उच्चारण में दूसरे वर्णों की सहायता नहीं ली जाती है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं।
जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ,

स्वर वर्ण के तीन भेद होते हैं :-
(i) ह्रस्व स्वर (ii) दीर्घ स्वर (iii) प्लुत स्वर

(i) ह्रस्व स्वर :→ जिन वर्णों के उच्चारण में कम समय लगता है। उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है।
जैसे - अ, इ, उ, ऋ आदि

(ii) दीर्घ स्वर :- (संयुक्त स्वर) → जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दुगुना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं।
जैसे :- आ, ई, ऊ, ए, ऐ आदि

P.T.O.

(iii) प्लुत स्वर :- जिन वर्णों के उच्चारण में दीर्घ स्वर की अपेक्षा दुगुना समय से भी अधिक समय लगता है उसे प्लुत स्वर कहते हैं।

जैसे :- ओ३म्, श्री३

(ख) व्यंजन वर्ण :- स्वर वर्ण की सहायता से जिस वर्ण का उच्चारण होता है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं।

जैसे :- क् + अ = क
म् + अ = म इत्यादि

व्यंजन वर्ण के तीन भेद हैं :-

(i) स्पर्श व्यंजन :- जिन वर्णों का उच्चारण कंठ, तालु मूर्धा, दंत, एवं, ओष्ठ के स्पर्श से होता है, उसे स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

जैसे - क - ङ (वर्ग) - कंठ से
च - ञ (वर्ग) - तालु से
ट - ण - मूर्धा से
त - न - दन्त से
प - म - ओष्ठ से

(ii) उष्म व्यंजन :- जिन वर्णों का उच्चारण रगड़ या घर्षण से उत्पन्न गर्म वायु से होता है, उन्हें उष्म व्यंजन कहते हैं।

जैसे - श, ष, स, ह।

Scanned with CamScanner

(iii) अंतःस्थ व्यंजन - जिन वर्णों का उच्चारण कंठ, तालु मूर्धा. के स्पर्श से होता है उसे अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं।

जैसे - य, र, ल, व

इन व्यंजनों के अतिरिक्त और भी व्यंजन हैं जो निम्न हैं :-

संयुक्त व्यंजन :- दो व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन को संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

जैसे :- क् + ष = क्ष , त् + र = त्र , श् + र = श्र

ज् + ञ = ज्ञ

द्वित्व व्यंजन :- दो समान व्यंजन के मेल को द्वित्व व्यंजन कहते हैं।

जैसे :- क् + क = क्क : पक्का

त् + त : त्त = कुत्ता

न् + न = न्न : अन्न

संयुक्त स्वर :- जब एक या एक से अधिक स्वर रहित व्यंजन किसी स्वर सहित व्यंजन से मिलते हैं तब वे संयुक्ताक्षर कहलाते हैं।

जैसे - क् + त = क्त : वक्त

म् + ल = म्ल : अम्ल

Scanned with CamScanner

ध्वनि

मुँह के विभिन्न हिस्सों या उच्चारण स्थान से जो वर्ण या वर्णों के समूह का उच्चारण होता है, उसे ध्वनि कहते हैं।

यहाँ ध्यान देने की बात है कि यदि उच्चारित ध्वनि, कुछ अर्थ प्रकट करे तो वह ध्वनि व्याकरण की दृष्टि से ध्वनि है, यदि उसका कोई अर्थ न हो तो वह निरर्थक ध्वनि कहलाती है।

मौखिक भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है।

Scanned with CamScanner

व्याकरण

शब्द

शब्द:- वर्णों या अक्षरों के उस सार्थक समूह को शब्द कहते हैं जिसका कुछ न कुछ निश्चित अर्थ होता है।
जैसे- बालक, घर, पहाड़, नदी, गाय आदि।

शब्द के भेद

अर्थ के विचार से शब्द के दो भेद होते हैं:-
(क) सार्थक शब्द
(ख) निरर्थक शब्द

(क) सार्थक शब्द:- सार्थक वे शब्द हैं, जिनका कोई निश्चित अर्थ होता है।
जैसे- लोटा, पानी, साड़ी, रोटी आदि
(ख) निरर्थक शब्द:- निरर्थक वे शब्द हैं जिनका कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है।
जैसे- टीरो, ड़ाघो, नीपा, ड़ीसा आदि

रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं:-
(क) रूढ़ - जो शब्द परम्परा (पहले) से ही किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते चले आ रहे हैं और इनका कोई भी खण्ड सार्थक नहीं होता है।
जैसे- घर, नाक, फल, घोड़ा आदि
फ+ल। इसका कोई खण्ड सार्थक नहीं है।

(ख) यौगिक:- यौगिक उन शब्दों को कहते हैं जो दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने होते हैं।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

जैसे - देवालय, पाठशाला, हिमालय आदि

देव + आलय / इसके दोनों खण्डों का अर्थ निकलता है।
देव का अर्थ देवता तथा आलय का अर्थ - स्थान

(ग) योगरूढ़ :- ऐसे यौगिक शब्द जो अपने सामान्य शाब्दिक अर्थ को छोड़ कर विशेष अर्थ प्रकट करते हैं। वे योगरूढ़ कहलाते हैं।

जैसे - लम्बोदर, पंकज, वीणापाणी, आदि

उदाहरण - योगरूढ़ शब्द	साधारण शब्द	विशेष अर्थ
लम्बोदर	- लम्बे पेट वाला	गणेश
पंकज	- कीचड़ में जन्मा	कमल

उत्पत्ति के विचार से शब्द के चार भेद होते हैं :-

(क) तत्सम - संस्कृत के वे मूल शब्द, जो ज्यों के त्यों हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम कहलाते हैं।

जैसे - पुष्प, पत्र, सत्य, अग्नि आदि

(ख) तद्भव :- संस्कृत के ऐसे शब्द जो हिन्दी में रूप बदलकर प्रयुक्त होते हैं, तद्भव कहलाते हैं।

जै० - आग, रात, माई, फूल आदि

(ग) देशज - अपने ही देश की बोल-चाल से आए शब्द, देशज कहलाते हैं।

जैसे - कुदाल, मक्का, चौकी, पगड़ी आदि

(घ) विदेशज - विदेशी भाषा से आए शब्द, जिनका हिन्दी में प्रयोग होता है, विदेशज कहलाते हैं।

जैसे - स्टेशन, अदालत, आदमी, चाय आदि
(अंग्रेजी) (अरबी) (फारसी) (चीनी) भाषा

रूपान्तर के आधार पर शब्द के दो भेद हैं :-

(क) विकारी शब्द :- जो शब्द लिंग, वचन, पुरुष और कारक →

के अनुसार अपने रूप बदलते हैं, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। ऐसे शब्द हैं:-
संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया

(ख) अविकारी शब्द:- जो शब्द लिंग, वचन, पुरुष और कारक के अनुसार अपने रूप नहीं बदलते, उन्हें अविकारी शब्द या अव्यय कहते हैं।

—:*:—

वचन

वचन - वचन का अर्थ होता है- बोली, लेकिन हिन्दी व्याकरण में वचन संख्या का बोध कराता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।
जैसे - लड़का, लड़की, कुत्ता, मैं आदि - एक का बोध
लड़के, लड़कियाँ, कुत्ते, हम आदि - अनेक का बोध

वचन के दो भेद होते हैं:-
(क) एकवचन
(ख) बहुवचन

(क) एकवचन:- शब्द के जिस रूप से एक व्यक्ति या वस्तु का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे- लड़का, कलम, मैं आदि

(ख) बहुवचन:- शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं।
जैसे - लड़के, कलमें, हम आदि

Scanned with CamScanner

हिन्दी व्याकरण

कक्षा - VI

संज्ञा

संज्ञा - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
जैसे:- सोहन, पुस्तक, पटना, बुढ़ापा आदि।

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं:-

(i) **व्यक्तिवाचक संज्ञा**:- जो संज्ञा शब्द किसी खास व्यक्ति, स्थान, वस्तु आदि के नाम का बोध कराता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - रामायण, ताजमहल, मोहन आदि।

(ii) **जातिवाचक संज्ञा**:- जो संज्ञा शब्द किसी प्राणी, वस्तु अथवा पदार्थ की पूरी जाति का बोध कराता है उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे:- लड़की, गाय, बकरी, इत्यादि।

(iii) **भाववाचक संज्ञा**:- जिस संज्ञा से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का गुण-दोष, स्वभाव, अवस्था, भाव आदि का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे:- बुढ़ापा, बचपना, मिठास आदि

(iv) **समूह वाचक संज्ञा**:- जिस संज्ञा शब्द से वस्तु या व्यक्ति के समूह का बोध हो उसे समूह वाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे - मेला, सेना, विद्यालय, बाजार आदि।

(v) **द्रव्यवाचक संज्ञा** - जिस संज्ञा से नापने या तौलने वाली वस्तु का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे:- सोना, चाँदी, दूध, तेल, कपड़ा, चावल आदि

Scanned with CamScanner

व्याकरण

सर्वनाम
PRONOUN

सर्वनाम - संज्ञा के बदले जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उसे सर्वनाम कहते हैं।

हिन्दी में ग्यारह सर्वनाम हैं:- मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या।

इन्हीं सर्वनाम से और भी सर्वनाम बनते हैं:-

मैं - मेरा तुम - तुम्हारा वह - उस, इसका, उसको

हम - हमारा आप - आपका

सर्वनाम के छः भेद होते हैं:-

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम → जिस सर्वनाम से बोलने वाले, सुननेवाले और जिसके बारे में कहा जाए उसका बोध हो उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे - मैं, मैंने, हमलोग, आप, आपको, उसका, उसकी आदि

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं-

(i) उत्तम पुरुष - कहनेवाला अपने लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग करता है, उसे उत्तम पुरुष कहते हैं

जैसे - मैं, मैंने, हम, हमने, मेरा, मेरी, हमारा, हमारी आदि

(ii) मध्यम पुरुष: जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग सुननेवाला के लिए किया जाता है उसे मध्यम पुरुष कहते हैं।

जैसे - तू, तुम, आप, तुमलोग, आपलोग, तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे, आपका, आपकी, आपके आदि

Scanned with CamScanner

(iii) अन्य पुरुष – जिसके विषय में बात की जाती है उसे अन्यपुरुष कहते हैं।
जैसे- यह, वह, वे, ये, जो, सो, कुछ, कौन, क्या, कोई आदि

② निश्चयवाचक सर्वनाम :→ जो सर्वनाम नजदीक या दूर किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं उन्हें निश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे – यह कलम मेरी है। वह तुम्हारी गाय है।

③ अनिश्चयवाचक सर्वनाम :– जिस सर्वनाम से अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध हो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे– कोई आ रहा है। दाल में कुछ है।

④ संबंध वाचक सर्वनाम :– जो सर्वनाम प्रधान वाक्य और आश्रित वाक्यों में आये संज्ञा या सर्वनाम से संबंध जोड़ता है उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे – जो ---- सो   जहाँ – वहाँ   जैसी-वैसी
जिसकी ---- उसकी   जैसा – वैसा   आदि

उदा०- जो सोता है सो खोता है। जैसी करनी वैसी भरनी

⑤ निजवाचक सर्वनाम – जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्ता अपने लिए करता है उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।
उदा०→ मैं स्वयं चला जाऊँगा।
मैं अपना काम आप ही करता हूँ।

Scanned with CamScanner

⑥ प्रश्नवाचक सर्वनाम - जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

उदा० - कौन, क्या, कहाँ।

नोट - कौन का प्रयोग प्राय: प्राणी के लिए तथा क्या का प्रयोग किसी वस्तु के लिए किया जाता है।

Scanned with CamScanner

व्याकरण

विशेषण

विशेषण - जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, रंग, दशा, आकार आदि) बतलाते उसे विशेषण कहते हैं।

जैसे - वह सुन्दर है। — गुण
वह कुरूप है। — दोष
चार लड़के पढ़ रहे हैं। — संख्या
थोड़ा खा लो। — थोड़ा
फूल पीला है। — पीला

विशेषण के चार भेद होते हैं -

1. **गुणवाचक विशेषण** :- जिस विशेषण शब्द से गुण, दोष, रंग, आकार, अवस्था आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - अच्छा, बुरा, काला, बूढ़ा, जवान, सुबह आदि

2. **संख्यावाचक विशेषण** :- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता बताते हैं उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - दस गाय, पाँच कलमें, कुछ, थोड़ा आदि
संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते हैं :-
(क) **निश्चित संख्या वाचक विशेषण** :- जिस विशेषण से निश्चित संख्या का बोध होता है, उसे निश्चित संख्या वाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - चार आदमी, दो केला, एक दर्जन अंडे आदि

(ख) **अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण** - जिस विशेषण -

P.T.O.

Scanned with CamScanner

शब्द से निश्चित संख्या का बोध नहीं हो उसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - कुछ लड़के, बहुत लोग, सभी बच्चे - आदि

3. परिमाणवाचक विशेषण :- जो विशेषण किसी वस्तु की माप-तौल या मात्रा का बोध कराता है, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
जैसे - थोड़ी चीनी, किलो भर चावल, एक मीटर कपड़ा आदि

परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं :-
(क) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण :- जो विशेषण निश्चित परिमाण का बोध कराता है उसे निश्चित परिमाण-वाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - एक किलो चावल, पाँच मीटर कपड़ा आदि

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण :- जो विशेषण अनिश्चित परिमाण का बोध कराते हैं उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे - थोड़ा चावल, कुछ दूध आदि

4. सार्वनामिक विशेषण :- जो सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयोग किये जाते हैं, वे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।
जैसे - यह, वह, कौन, कुछ, क्या आदि।

Scanned with CamScanner

प्रविशेषण :- विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं।
जैसे - थोड़ा, बहुत, अधिक, अत्यधिक, ठीक आदि

उदाहरण - दूध मीठा है। - मीठा विशेषण
दूध बहुत मीठा है। - बहुत प्रविशेषण

विशेय :- जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतायी जाती है उस संज्ञा या सर्वनाम को विशेय कहते हैं।

या

जिसकी विशेषता बतायी जाए उसे विशेय कहते हैं।

जैसे - लड़का तेज है।
इसमें तेज विशेषण तथा लड़का विशेय है।

वह लंबा है।
इसमें लंबा विशेषण तथा वह विशेय है।

—x—

Scanned with CamScanner

क्रिया

क्रिया:- जिस शब्द से किसी काम को करने या होने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं।
जैसे- खाना, पीना, खेलना, चलना, पढ़ना आदि

धातु - जिस मूल शब्द से क्रिया का निर्माण होता है, उसे धातु कहते हैं। धातु में "ना" जोड़कर क्रिया बनायी जाती है।
जैसे- पढ़ + ना

क्रिया के भेद:-
कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं:-
(क) अकर्मक क्रिया - जिस क्रिया के साथ कर्म न हो या किसी कर्म के रहने की संभावना न हो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे- हँसना, रोना, सोना, चलना आदि।
उदाहरण - प्र० वह क्या रोता है? इसका कोई न प्रश्न है न उत्तर
(ख) सकर्मक क्रिया - जिस क्रिया के साथ कर्म हो या कर्म के रहने की संभावना हो उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
जैसे - खाना, पीना, पढ़ना, लिखना आदि।
उदाहरण -
प्रश्न - वह क्या खाता है?
उत्तर - वह आम खाता है।
ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है इसमें कर्म रहने की संभावना है। अतः खाना सकर्मक क्रिया है।

Scanned with CamScanner

संरचना (बनावट) के आधार पर क्रिया के भेद —

1. प्रेरणार्थक - क्रिया — जिस क्रिया से इस बात का ज्ञान हो कि कर्त्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को उसे करने के लिए प्रेरित करता है उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।
उदाहरण - राम नौकर से कपड़ा धुलवाता है।
अतः - धुलवाता - प्रेरणार्थक क्रिया है।

2. संयुक्त क्रिया - जब दो या दो से अधिक क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग हो वह क्रिया संयुक्त क्रिया कहलाती है।
जैसे - मैं खाना खा चुका।
खा + चुका - संयुक्त क्रिया है।

3. सहायक क्रिया :- मुख्य क्रिया की सहायता करने वाली क्रिया को सहायक क्रिया कहते हैं।
जैसे - हूँ, है, हैं, रहा, रही, रहे, था, थे, थी, थीं आदि
उदाहरण :- मैं खा रहा हूँ। रहा, हूँ, है सहायक क्रिया वह पढ़ता है।

4. पूर्वकालिक क्रिया - जब कर्त्ता एक क्रिया को समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया आरंभ करता है, तो पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।
जैसे - मैं पढ़कर लिखने लगा।
यहाँ पढ़कर पूर्वकालिक क्रिया है।

Scanned with CamScanner

5. द्विकर्मक क्रियाएँ:- जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे - शिक्षक विद्यार्थी को पढ़ाते हैं।
यहाँ एक कर्म है - विद्यार्थी -

2. शिक्षक विद्यार्थी को हिन्दी पढ़ाते हैं।
यहाँ दो कर्म हैं:- विद्यार्थी और हिन्दी

— x —

क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण:- जो शब्द क्रिया की विशेषता बताये, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं।
जैसे - धीरे-धीरे, तेज, जोर-जोर से आदि।

क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं:-

1. स्थान वाचक - जो क्रिया विशेषण क्रिया के स्थान की स्थिति एवं दिशा का बोध कराये, उसे स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।
जैसे - यहाँ, वहाँ, आगे-पीछे, ऊपर, नीचे, बाहर, भीतर आदि
उदाहरण - वह यहाँ रहता है। - स्थान की स्थिति का बोध
सड़क के बाएँ चलो। - स्थान की दिशा का बोध।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

2. कालवाचक - जो शब्द क्रिया के काल (समय) संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं। उसे कालवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे - आज, कल, अभी-अभी, कभी, सुबह, शाम आदि

उदाहरण - वह अभी आ रहा है। - क्रिया के समय का बोध।
मोहन आजकल खेल रहे हैं। - क्रिया की अवधी का बोध।

3. रीतिवाचक :- जिस क्रियाविशेषण से क्रिया के प्रकार, निश्चय, अनिश्चय, स्वीकार, निषेध आदि का बोध हो, उसे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे - ऐसे, वैसे, कैसे, अतः, जोर-जोर से, धीरे-धीरे आदि

उदाहरण - वह ऐसे लिखता है। - क्रिया के प्रकार का बोध
वह शायद जाए। - क्रिया के अनिश्चय का बोध
मैं नहीं खेलूँगा। - क्रिया के निषेध का बोध

4. परिमाण वाचक - जिस क्रिया विशेषण से क्रिया की न्यूनता, अधिकता, तुलना, माप आदि का बोध हो, उसे परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे - इतना, उतना, जितना, कितना, थोड़ा आदि

उदाहरण - वह थोड़ा खाता है। - न्यूनता का बोध
वह बहुत पढ़ता है। - अधिकता का बोध
मोहन कितना सोता है। - तुलना का बोध

Scanned with CamScanner

व्याकरण

संधि

परिभाषा - दो अक्षरों के आपस में मिलने से उसके रूप और उच्चारण में जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।
जैसे - गण + ईश = गणेश (अ + ई = ए)

संधि-विच्छेद :- संधि द्वारा बने वर्णों को पुनः अलग करने की विधि संधि-विच्छेद कहते हैं।
जैसे - धनादेश = धन + आदेश

संधि के तीन भेद होते हैं :-
(1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग-संधि

1. स्वर संधि :- दो स्वरों के आपस में मिलने से जो रूप परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं।
जैसे - देव + आलय

स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं :-
(क) दीर्घ-संधि (ख) गुण-संधि (ग) वृद्धि-संधि
(घ) यण्-संधि (ङ) अयादि-संधि

(क) दीर्घ संधि - इसमें अ, आ, इ, ई, उ, ऊ के साथ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ मेल होने पर दीर्घ स्वर आ, ई, ऊ बन जाते हैं। इसे ही दीर्घ संधि कहते हैं।

जैसे :-

(क) अ + अ = आ - भाव + अर्थ = भावार्थ
अ + आ = आ - पुस्तक + आलय = पुस्तकालय
आ + अ = आ - परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी
आ + आ = आ - प्रतीक्षा + आलय = प्रतीक्षालय

Scanned with CamScanner

(ख) इ + इ = ई – कवि + इन्द्र = कवीन्द्र
इ + ई = ई – गिरि + ईश = गिरीश
ई + इ = ई – मही + इन्द्र = महीन्द्र
ई + ई = ई – नदी + ईश = नदीश

(ग) उ + उ = ऊ – भानु + उदय = भानूदय
उ + ऊ = ऊ – अंशु + ऊर्मि = अंशूर्मि
ऊ + उ = ऊ – वधू + उत्सव = वधूत्सव
ऊ + ऊ = ऊ = भू + ऊर्जा = भूर्जा

(ख) गुण-संधि – यदि 'अ' या 'आ' के बाद इ/ई, उ/ऊ, ऋ स्वर आते हैं, तो दोनों के मिलने से क्रमशः 'ए' तथा 'अर्' हो जाते हैं। इसी ही गुण-संधि कहते हैं। जैसे –

(क) अ + इ = ए – देव + इन्द्र = देवेन्द्र
अ + ई = ए – गण + ईश = गणेश
आ + इ = ए – यथा + इष्ट = यथेष्ट
आ + ई = ए – महा + ईश = महेश

(ख) अ + उ = ओ – ज्ञान + उदय = ज्ञानोदय
अ + ऊ = ओ – शीत + ऊष्म = शीतोष्ण
आ + उ = ओ – महा + उत्सव = महोत्सव
आ + ऊ = ओ – गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि

(ग) अ + ऋ = अर् – सप्त + ऋषि = सप्तर्षि / आ + ऋ = अर् – महा + ऋषि = महर्षि

(ग) वृद्धि-संधि :- यदि अ/आ के बाद ए/ऐ हो, तो 'ऐ' में और अ/आ के बाद ओ/औ हो, तो 'औ' में बदलना वृद्धि संधि कहलाती है। जैसे –

(क) अ + ए = ऐ – एक + एक = एकैक
आ + ए = ऐ – तथा + एव = तथैव

(ख) अ + ओ = औ – वन + ओषधि = वनौषधि
आ + ओ = औ – महा + ओषध = महौषध

(घ) यण्-संधि :- यदि इ, ई, उ, ऊ या ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो, इ/ई का – 'य्', उ/ऊ का – 'व्' और ऋ का – 'र्' हो जाना यण्- संधि कहलाती है।
जैसे –

Scanned with CamScanner

(ङ) इ + य = य - यदि + अपि = यद्यपि
इ + आ = या - इति + आदि = इत्यादि
ई + आ = या - नदी + आगम = नद्यागम
इ + उ = यु - उपरि + उक्त = उपर्युक्त
इ + ऊ = यू - नि + ऊह = न्यूह
इ + ए = ये - प्रति + एक = प्रत्येक

(च) उ + अ = व - अनु + अय = अन्वय
उ + आ = वा - सु + आगत = स्वागत
उ + ए = वे - अनु + एषण = अन्वेषण
उ + इ = वि - अनु + इति = अन्विति

(छ) ऋ + आ = रा - पितृ + आदेश = पित्रादेश

(5) **अयादि संधि** - यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ' या 'औ' के आगे कोई भिन्न स्वर हो तो इनके स्थान में क्रमशः अय, आय, अव् और आव् होता है। जैसे -

(क) ए + अ = अय - ने + अन = नयन
ऐ + अ = आय - गै + अक = गायक
ऐ + इ = आयि - नै + इका = नायिका

(ख) ओ + अ = अव - पो + अन = पवन
ओ + इ = अवि - पो + इत्र = पवित्र

(ग) औ + अ = आव - पौ + अक = पावक | औ + इ = आवि - नौ + इक = नाविक

2\. **व्यंजन-संधि** - व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार को व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे -
जगत् + ईश = जगदीश

व्यंजन-संधि के नियम -
(i) यदि क्, च्, ट्, त्, प् के बाद कोई स्वर वर्ण हो या किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण अथवा य, र, ल, व आए तो क्, च्, ट्, त्, प् की जगह उसी वर्ग का तीसरा वर्ण आ जाता है। जैसे -
सत् + गति = सद्गति　　षट् + आनन = षडानन
जगत् + आनन्द = जगदानन्द
दिक् + अम्बर = दिगम्बर
अप् + ज = अब्ज

(ii) यदि क, च, ट, त, प के बाद 'न' या 'म' आए तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं।

जैसे – वाक् + मय = वाङ्मय कच् + चन = कंचन

वट् + मात्र = वण्मात्र जगत् + नाथ = जगन्नाथ

(iii) यदि "छ" के पहले कोई स्वर वर्ण आए तो 'छ' के स्थान पर "च्छ" होता है।

जैसे – परि + छेद = परिच्छेद ; स्व + छंद = स्वच्छन्द

(iv) यदि "म्" के बाद कोई स्पर्श व्यंजन आए, तो "म्" के अनुस्वार (ं) या उस वर्ग का पंचमाक्षर हो जाता है।

जैसे – सम् + देह = संदेह सम् + धि = संधि

सम् + सार = संसार

(v) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो 'त् द्' 'ल' में बदल जाते हैं। और 'न' के बाद 'ल' रहे तो 'न' का अनुनासिक के साथ "ल" हो जाता है और वह अनुनासिक के पहले वाले वर्ण पर आ जाता है।

जैसे :-

उत् + लास = उल्लास महान् + लाभ = महाँल्लाभ

(vi) यदि 'महत्' र्, ष् के बाद अंत में 'न' हो तो 'न' का 'ण' हो जाता है।

जैसे :- प्र + मान = प्रमाण

महत् + न = महण

(3) विसर्ग संधि – (:) के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से उत्पन्न विकार विसर्ग संधि कहलाते हैं।

जैसे – निः + संतान = निःसंतान

मनः + रथ = मनोरथ

P.T.O.

Scanned with CamScanner

संधि

विसर्ग संधि के नियम :-

(i) यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और उसका मेल अ या किसी वर्ग के तीसरे, चौथे या पाँचवें वर्ण (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ) से हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। जैसे -

मन: + अनुकूल = मनोनुकूल
अध: + गति = अधोगति

(ii) विसर्ग का 'र' में परिवर्तन :-
यदि विसर्ग से पहले 'अ', 'आ' से भिन्न स्वर हो और विसर्ग का मेल किसी स्वर, किसी वर्ग के तीसरे, चौथे या पाँचवें वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह से हो तो विसर्ग 'र' में परिवर्तित हो जाता है। जैसे -
नि: + आशा = निराशा, नि: + बल = निर्बल, नि: + यात = निर्यात

(iii) विसर्ग का 'श' में परिवर्तन
यदि विसर्ग से पहले स्वर हो और विसर्ग का मेल च, छ, श से हो तो विसर्ग 'श' हो जाता है। जैसे -
हरि: + चंद्र = हरिश्चन्द्र नि: + छल = निश्छल
नि: + चय = निश्चय

(iv) विसर्ग का 'ष' में परिवर्तन -
यदि विसर्ग से पहले इ, उ, हो तथा विसर्ग का मेल क, ख, ट, ठ, प या फ से हो तो विसर्ग 'ष' में परिवर्तित हो जाता है। जैसे -
नि: + फल = निष्फल नि: + कपट = निष्कपट
दु: + कर्म = दुष्कर्म नि: + पाप = निष्पाप

Scanned with CamScanner

(v) विसर्ग का "स" में परिवर्तन

यदि विसर्ग का मेल त, थ, स से हो तो विसर्ग "स" में परिवर्तित हो जाता है। जैसे—

मरुः + थल = मरुस्थल , निः + संतान = निस्संतान

नमः + ते = नमस्ते

(vi) विसर्ग का लुप्त होना—

यदि विसर्ग का मेल 'र' से हो तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और विसर्ग का पहला स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे—

निः + रोग = नीरोग निः + रस = नीरस

(vii) विसर्ग का परिवर्तन न होना—

यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो तथा बाद में 'क' या 'प' हो तो विसर्ग का परिवर्तन नहीं होता है। जैसे—

प्रातः + काल = प्रातः काल अंतः + करण = अंतः करण

Scanned with CamScanner

VI+VI

व्याकरण

उपसर्ग + प्रत्यय

उपसर्ग – वह शब्दांश जो किसी मूलशब्द के पहले लगा कर उसके अर्थ को बदल देते हैं, उसे उपसर्ग कहते हैं।

जैसे – "जय" शब्द का अर्थ है "जीत"

यदि मूल शब्द – "जय" में उपसर्ग – "परा" लगा दिया जाए तो नया शब्द बना – "पराजय" जिसका अर्थ होगा – हार।

शब्द	उपसर्ग	मूलशब्द
पराजय	परा +	जय
प्रबल	प्र +	बल – आदि

प्रत्यय – वह शब्दांश जो किसी मूलशब्द के अंत में लगाकर उसके अर्थ को बदल दे, उसे प्रत्यय कहते हैं।

जैसे –

	शब्द	मूलशब्द	प्रत्यय
संज्ञा	मित्रता –	मित्र +	ता
,,	गुरुत्व –	गुरु +	त्व
	फलित –	फल +	इत
सर्वनाम	मेरी –	मेरा +	ई
विशेषण	लघुत्व –	लघु +	त्व
,,	ऊँचाई –	ऊँचा +	आई
सर्वनाम	अपनापन –	अपना +	पन

P.T.O. →

Scanned with CamScanner

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—

(i) कृत् प्रत्यय — क्रिया या धातु के अंत में जो प्रत्यय लगते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्यय को लगाने से जो शब्द बनते हैं उसे कृदन्त कहलाते हैं।

जैसे —

पढ़ + आई — पढ़ाई
खेल + आड़ी — खिलाड़ी

(ii) तद्धित प्रत्यय — संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अंत में जुड़नेवाला प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाता है। और उसके मेल से बने शब्द को तद्धितान्त कहते हैं।

उदाहरण —

संज्ञा	प्रत्यय	बनेहुए शब्द
मित्र	ता	मित्रता
मनुष्य	त्व	मनुष्यत्व

विशेषण	प्रत्यय	
कम	ई	कमी
ऊँचा	आई	ऊँचाई

सर्वनाम

मेरा	ई	मेरी
अपना	पन	अपनापन